संस्कृत के अभिनव रचनाधर्मी :

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी

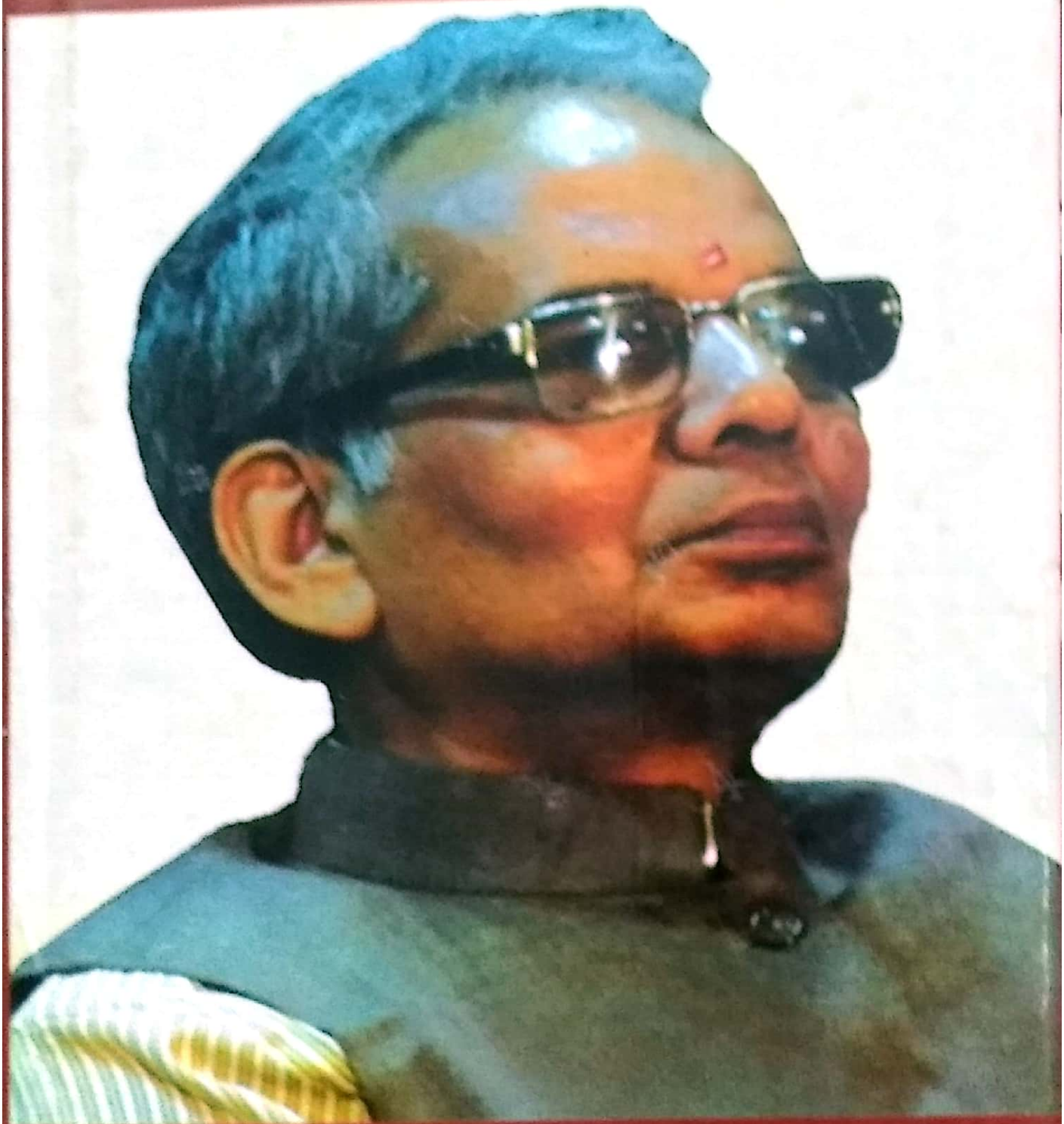

सम्पादक

प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

1. सो ऽस्मन्मनोवल्लभः
आचार्य अभिराजराजेन्द्रमिश्रः 11
2. राधावल्लभलहरी
आचार्य रमाकान्तशुक्लः 14
3. राधावल्लभवैभवपञ्चाशिका
डॉ. राजकुमारमिश्रः 30
4. कल्पक गतिशील व्यक्तित्व : डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी 41
5. आचार्य राधावल्लभ के जीवन–प्रस्थानत्रय
डॉ. अभिराजराजेन्द्रमिश्रः 44
6. एक जनोन्मुखी बहुविद्याधर : राधावल्लभ त्रिपाठी
डॉ. विजय बहादुर सिंह 62
7. राधावल्लभ त्रिपाठी और उनका रचना संसार
डॉ. रमाकान्त पाण्डेय 69
8. तोते के मुख से नारी–संघर्ष की कथा–अभिनवशुकसारिका
प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता 96
9. लहरीदशकम् में लोकचेतना के प्रसंग
डॉ. ओम्प्रकाश राजपाली 106
10. संस्कृत साहित्य को आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का योगदान
डॉ.परमानन्द मिश्र 112
11. उपाख्यानमालिका में युगबोध
डॉ. श्रीमती कृष्णा जैन 117
12. लोकधर्मी परम्परा के समीक्षक आचार्यराधावल्लभ त्रिपाठी एक विश्लेषण
डॉ. वत्सला 126
13. आचार्य त्रिपाठी जी की कतिपय कृतियों का अभिनव वैशिष्ट्य
डॉ महेश कुमार द्विवेदी 136
14. संस्कृत काव्य विधाओं को आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का योगदान
डॉ. नौनिहाल गौतम 144
15. आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की दृष्टि में काव्य, कवि एवं समीक्षक
डॉ. सञ्जय कुमार 153

Scanned with CamScanner

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की दृष्टि में काव्य, कवि एवं समीक्षक

डॉ. सञ्जय कुमार

आधुनिक साहित्यशास्त्र परम्परा के अभिनव अभिभावक आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी का साहित्यशास्त्र परम्परा में महनीय स्थान है। उन्होंने गद्य-पद्य नाटक के साथ-साथ साहित्य धर्मों के यशःख्यापन हेतु 'अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्' नामक लक्षण ग्रंथ की सृष्टि भी की है। इस लक्षण ग्रंथ में त्रिपाठी जी संस्कृत साहित्य शास्त्र परम्परा की थाती को सहेजते हुए नित-नूतनता को प्रस्तुत करते हैं तथा साहित्य धर्मों का पूर्ण निर्वाह भी करते हैं। वस्तुतः काव्य और कवि दोनों हमारे साहित्य के रत्न माने जाते हैं। दोनों का महत्त्व हमारे साहित्य में समान है, इसीलिए आचार्य त्रिपाठी जी काव्य, कवि और समीक्षक तीनों के विषय में इस लक्षण ग्रंथ में अपने विचार अनुस्यूत किये हैं। कवि का कर्म ही काव्य कहलाता है। लेकिन ध्यान रहे सभी कर्म न कविकर्म कहलाता है और न सभी कवि ही कहलाते हैं। कवि के विशेष कर्म को ही काव्य कहा जाता है और जो विशेष कर्म करता है वह कवि होता है। इस प्रकार काव्य और कवि दोनों सामान्य नहीं बल्कि विशेष हैं। यही विशेष शब्द प्राचीन समय से आचार्यों द्वारा व्याख्यायित किया जाता रहा है, परन्तु आज भी यह शब्द पूर्णता को नहीं प्राप्त कर पा रहा है। पुनः उसी काव्य, कवि आदि के स्वरूप को अभिनव स्वरूप में गढ़ने का प्रयास त्रिपाठी जी करते हैं और पूर्ण सफल भी होते हैं। उन्होंने अपने 'अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्' मे काव्य का लक्षण इस प्रकार दिया है-

लोकानुकीर्तनं काव्यम्।[1]

अर्थात् लोक का अनुकीर्तन काव्य है। यहाँ लोक शब्द से तात्पर्य केवल स्थावर जङ्गमात्मक ही नहीं अपितु चेतना से विभाव्यमान समग्र भूवन ही लोक है। यह लोक स्थाणु या स्थिर नहीं अपितु प्रतिक्षण परिवर्तन और

Scanned with CamScanner